

नवरात्रि में व्रत भी, सेहत भी



सात्विक आहार और सही दिनचर्या से बनाएं उपासना को स्वस्थ और सुरक्षित

डॉ. रूप कुमार बनर्जी, होम्योपैथिक चिकित्सक, गोरखपुर

नवरात्रि केवल मां दुर्गा की आराधना का पर्व नहीं, बल्कि जीवनशैली, खानपान और दिनचर्या को अनुशासित करने का भी अवसर है। इन नौ दिनों में कोई फलाहार करता है, कोई एक समय भोजन करता है तो कोई निर्जला व्रत रखता है। लेकिन याद रखिए, व्रत का उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं, मन को संयमित कर

ईश्वर की आराधना करना है। अक्सर देखा जाता है कि लोग अनाज तो छोड़ देते हैं, पर साबुदाने की खिचड़ी, तली हुई कुट्टू की पूड़ी, आलू के चिप्स, मिठाइयां और अधिक नमक वाली नमकीन का सेवन बढ़ा देते हैं। इससे अतिरिक्त कैलोरी, वसा और चीनी शरीर में जाती है और वजन बढ़ना, ब्लड प्रेशर, शुगर का उतार-चढ़ाव और पाचन की समस्या हो सकती है।

- नवरात्रि में क्या खाएं ?**
 - ✓ फल और सब्जियां: सेब, अमरूद, पपीता, संतरा, लौकी, कद्दू, खीरा, टमाटर का प्रयोग कम तेल में करें। मधुमेह रोगी फलों का रस न लें।
 - ✓ कुट्टू-सिंघाड़ा आटा: रोटी, चीला बनाएं, डीप फ्राई से बचें।
 - ✓ साबुदाना: मूंगफली और सब्जी मिलाकर सीमित मात्रा में लें।
 - ✓ दूध-दही: बिना चीनी का दही, दूध, सीमित पनीर ले सकते हैं।
 - ✓ मेवे-बीज: बादाम, अखरोट, मूंगफली बिना नमक के सीमित मात्रा में।
 - ✓ पानी: निर्जला व्रत न होने पर पर्याप्त पानी, नारियल पानी लें। किडनी रोगी डॉक्टर से पूछ लें।
- एक दिन का संतुलित फलाहार**

सुबह - पानी, एक छोटा फल और थोड़े मेवे मध्य सुबह - बिना चीनी का दही या दूध दोपहर - कुट्टू/सिंघाड़े का चीला, दही और सब्जी शाम - फल या बिना नमक के मेवे रात - लौकी/कद्दू की सब्जी के साथ रोटी या थोड़ी साबुदाना खिचड़ी

- किन चीजों से बचें ?**
 - तली हुई पूड़ी-पकौड़ी, चिप्स, अधिक नमक वाली नमकीन-पापड़, ज्यादा चीनी वाली मिठाइयां, एक बार में बहुत ज्यादा खाना, खाली पेट ज्यादा चाय-कॉफी और बिना भरोसे का खुला आटा। कुट्टू का आटा हमेशा विश्वसनीय स्रोत से ही लें।
- व्रत में हो सकने वाली समस्याएं**
 - निर्जलीकरण, शुगर कम होना या बढ़ना, बीपी बिगड़ना, अम्लता-कब्ज, सिरदर्द-थकान और चक्कर से गिरने का खतरा, खासकर बुजुर्गों में।
- मधुमेह रोगी विशेष ध्यान दें**
 - व्रत से पहले डॉक्टर से सलाह लें। लंबे समय तक भूखे न रहें, कुट्टू-सिंघाड़ा-आलू सीमित खाएं, मीठे शरबत से बचें, शुगर नियमित जांचें, दवा खुद कम-ज्यादा न करें। शुगर 70 mg/dL से कम होने पर व्रत तोड़ दें। टाइप-1 और अनियंत्रित शुगर वालों के लिए व्रत

जोखिम भरा हो सकता है।

- उच्च रक्तचाप के रोगी**
 - संघा नमक भी सोडियम है, असीमित न खाएं। पैकेटबंद नमकीन, चिप्स कम करें। दवा नियमित लें, पानी की कमी न होने दें। चक्कर या कमजोरी पर तुरंत बीपी जांचें। सीने में दर्द, सांस फूलना, तेज सिरदर्द होने पर तुरंत डॉक्टर से मिलें।
- अन्य रोगियों के लिए सलाह**
 - किडनी रोगी: पोटेशियम, नमक, पानी पर डॉक्टर की सलाह लें।
 - हृदय रोगी: निर्जला व्रत और दवा में बदलाव से बचें।
 - गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाएं: लंबा या निर्जला व्रत करने से पहले डॉक्टर से पूछें।
 - बुजुर्ग: नियमित भोजन, पानी और आराम जरूरी है।
- स्वस्थ दिनचर्या के सूत्र**
 - पर्याप्त नींद लें, खाली पेट भारी व्यायाम न करें, धूप में ज्यादा न रहें, भोजन धीरे-धीरे खाएं, कमजोरी-चक्कर को नजरअंदाज न करें। यदि व्रत में तबीयत बिगड़े तो जिद न करें।
 - भक्ति में श्रद्धा हो, आहार में संतुलन हो और दिनचर्या में अनुशासन हो, तभी उपासना कल्याणकारी है।

नवरात्र के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा को लगाएं मलाई पेड़े का भोग, दूध से घर पर बनाएं ये स्वादिष्ट मिठाई, नोट करें रेसिपी

नवरात्र का तीसरा दिन मां चंद्रघंटा को समर्पित होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां चंद्रघंटा को साहस, शक्ति, शांति और निर्भयता की देवी माना जाता है। उनके मस्तक पर सुशोभित अर्धचंद्र मन की शांति, अध्यात्म और चेतना पर नियंत्रण का प्रतीक है।

हिन्दू धर्म में कहा गया है कि मां चंद्रघंटा को दूध और दूध से बनी चीजों का भोग लगाना चाहिए क्योंकि यह उन्हें सबसे अधिक प्रिय है। ऐसे में अगर आप माता के लिए कुछ खास बनाने की सोच रहे हैं, तो भोग में मलाई पेड़ा बनाएं।

मलाई पेड़ारेसिपी

भोग में क्रीमी दूध से बना मलाई पेड़ा बनाने के लिए यहां बताई रेसिपी फॉलो करें:

सामग्री

- 4-5 कप फुल क्रीम दूध
- 2 छोटे चम्मच गर्म दूध
- 1 बड़ा चम्मच अरारोट पाउडर
- 3/4 कप मिल्क पाउडर
- 200 ग्राम कद्दूस पनीर
- 3-4 इलायची या 1/4 चम्मच इलायची पाउडर
- 1 बड़ा चम्मच घी
- 1/2 कप चीनी
- 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ पिस्ता
- 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ बादाम
- कुछ केसर



विधि

मलाई पेड़ा बनाने के लिए एक गहरे नॉन स्टिक पैन में 4-5 कप फुल क्रीम दूध को 4-5 मिनट तक तेज आंच पर उबालना है। इसके बाद मध्यम आंच पर 15 मिनट तक दूध के आधा हो जाने तक उबालें। इस दौरान चम्मच से बीच-बीच में चलाते हुए किनारों को खुरचना है।

एक कटोरी में 2 छोटे चम्मच गर्म दूध में कुछ केसर मिलाकर अलग रख दें।

15 मिनट बाद दूध में केसर वाला गर्म दूध और 1/2 कप चीनी मिलाएं। इसे भी 5 मिनट तक उबालना है और इस दौरान खुरचने के प्रसेस को भी जारी रखें।

अब एक छोटी कटोरी में दूध के

साथ 1 बड़ा चम्मच अरारोट पाउडर मिलाता है। इसे तब तक मिलाते रहें जब तक घोल न बन जाए। इसके बाद उबलते हुए दूध में कद्दूस पनीर के साथ अरारोट पाउडर का घोल भी डालें। इस मिश्रण को तब तक उबालना है, जब तक वह गाढ़ा होकर पैन का किनारा न छोड़ने लगे। मिश्रण गाढ़ा हो खोया जैसा दिखने लगे तो गैस बंद कर इसमें 1/4 चम्मच इलायची पाउडर मिलाएं। इसे एक तरफ ठंडा होने के रख देना है। इस स्टेप में दूध के गाढ़े मिश्रण से छोटी-छोटी लोई बनाकर उसे चपटा करें और ऊपर से पिस्ता-बादाम लगाएं। देवी चंद्रघंटा के लिए मलाई पेड़ा भोग तैयार है।

नाभि का महत्व और स्वास्थ्य से जुड़े वैज्ञानिक तथ्य नाभि से जुड़ी अद्भुत जानकारी! कितना सच, कितना भ्रम?

प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

आइए जानते हैं वैज्ञानिक सच्चाई! नाभि हमारे शरीर का एक छोटा सा हिस्सा है, लेकिन इसके बारे में सबसे ज्यादा भ्रांतियां फैली हैं। सोशल मीडिया पर अक्सर दावा किया जाता है कि नाभि में तेल डालने से आंखों की रोशनी बढ़ती है, बाल काले होते हैं, घुटनों का दर्द ठीक हो जाता है। क्या यह सच है? आइए वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर समझते हैं।

- गर्भावस्था में नाभि का महत्व - सच है**
 - गर्भ में बच्चे को गर्भनाल (Umbilical Cord) के माध्यम से मां से ऑक्सीजन और पोषण मिलता है। जन्म के बाद गर्भनाल काट दी जाती है और नाभि उसका बचा हुआ निशान होती है। यह शरीर का केंद्र बिंदु है, लेकिन जन्म के बाद इसका आंतरिक अंगों से सीधा कनेक्शन समाप्त हो जाता है।
- क्या नाभि में 72,000 रक्त वाहिकाएं होती हैं?**
 - * भ्रम है। इस दावे का कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। नाभि के आसपास सामान्य रक्त वाहिकाएं होती हैं, जैसे शरीर के अन्य हिस्सों में, लेकिन 72,000 नाड़ियों का कोई प्रमाणित आधार नहीं है।
- क्या मृत्यु के बाद तीन घंटे तक नाभि गर्म रहती है?**
 - * भ्रम है। यह दावा वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं है। मृत्यु के बाद शरीर का तापमान धीरे-धीरे कम होता है, नाभि का इससे कोई विशेष संबंध नहीं है।
- नाभि में घी या तेल लगाने से क्या होता है?**
 - * आंशिक सच: घी या नारियल का तेल

त्वचा पर लगाने से रूखापन कम करने में मदद मिल सकती है, जैसे शरीर की अन्य त्वचा पर।

- * भ्रम: लेकिन नाभि में तेल डालने से आंखों की रोशनी बढ़ती है, बाल काले होते हैं, बालों का झड़ना रुकता है या घुटनों का दर्द ठीक होता है - इसका कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
- 5. चेहरे के मुंहासे और आंखों के नीचे काले धरे नाभि में तेल लगाने से ये समस्याएं दूर होती हैं, यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं है। मुंहासे और डाक सकेल के कारण हार्मोन, नौद, पोषण और त्वचा की देखभाल से जुड़े होते हैं।
- 6. छोटे बच्चों के पेट दर्द के लिए नाभि पर हींग या तेल नाभि के आसपास हींग या तेल लगाने से पेट दर्द तुरंत ठीक हो जाता है, इसका ठोस प्रमाण नहीं है। बच्चे को लगातार परेशानी होने पर डॉक्टर से सलाह लें, घरेलू उपाय पर निर्भर न रहें।
- 7. नाभि की सही देखभाल कैसे करें?**
 1. नाभि को साफ और सूखा रखें।
 2. नहाते समय हल्के से साफ करें, तेज साबुन या रगड़ने से बचें।
 3. नाभि में तेल या घी भरकर रखने की आवश्यकता नहीं है।
 4. लालिमा, सूजन, दर्द या किसी प्रकार का स्राव होने पर तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।
- संपादकीय संदेश**
 - याद रखें! परंपराओं का सम्मान करें, लेकिन स्वास्थ्य संबंधी जानकारी अपनाते समय वैज्ञानिक प्रमाणों को भी महत्व दें। नाभि शरीर का एक सामान्य हिस्सा है, इसे चमत्कारी केंद्र मानना भ्रम है। सही देखभाल और सही जानकारी ही सच्चा स्वास्थ्य है।

परिवहन विशेष

अक्टूबर 2026

अंक 26

स्वास्थ्य • विज्ञान • जागरूकता

नाभि का महत्व और स्वास्थ्य से जुड़े वैज्ञानिक तथ्य

कितना सच, कितना भ्रम?

72,000 नसें? भ्रम

नाभि से 72,000 नसें जुड़ी होने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। नाभि भ्रूण अवस्था में नाल के जुड़ाव का शेष निशान मात्र है।

मृत्यु के बाद गर्म? भ्रम

मृत्यु के बाद शरीर का तापमान धीरे-धीरे कम होता है। नाभि विशेष रूप से गर्म नहीं रहती। यह स्थानीय तापमान का भ्रम है।

तेल लगाने से आंखें ठीक? भ्रम

नाभि पर तेल लगाने से आंखों की रोशनी ठीक होने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। आंखों की देखभाल के लिए नेत्र विशेषज्ञ से सलाह लें।

सही देखभाल: नाभि को साफ और सूखा रखें — रोजाना हल्के साबुन-पानी से साफ करें, पूरी तरह सुखाएं। गीला रहने से संक्रमण का जोखिम रहता है।

परंपरा का सम्मान • विज्ञान का प्रमाण

प्रस्तुति: संजय कुमार बाठला • Parivahan Vishesh, अक्टूबर 2026

नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलें — अपनी सोच बदलें, अपना जीवन सँवारें

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh

अक्टूबर 2026

नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलें - अपनी सोच बदलें, अपना जीवन सँवारें

मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें

सकारात्मक परिवर्तन के प्रमुख बिंदु

- क्रोध को विवेकपूर्ण दृढ़ता में बदलें
- निराशा को नए संकल्प में बदलें
- असफलता को अनुभव में बदलें

प्रधान संपादक

संजय कुमार बाठला

सह संपादक

पिकी कुंडू

मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें — सकारात्मक सोच ही सच्ची शक्ति है

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला

सह संपादक: पिकी कुंडू

प्रस्तावना: हमेशा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना हमारे हाथ में नहीं होता, लेकिन उन परिस्थितियों का सामना किस सोच और व्यवहार से करना है, यह हम बहुत हद तक स्वयं तय कर सकते हैं। जीवन में अनेक बार लोग, घटनाएँ और परिस्थितियाँ हमें भ्रमित, भयभीत, क्रोधित, निराश या आहत कर देती हैं।

- तथ्य: समस्या क्या है ?**
 - कभी किसी की आलोचना, कभी अपमानजनक व्यवहार, कभी असफलता और कभी दूसरों की ईर्ष्या हमारे मन की शांति को प्रभावित करती है।
 - कुछ लोग जानबूझकर भी हमें उकसाने या भावनात्मक रूप से विचलित करने का प्रयास कर सकते हैं।
 - दूसरों का व्यवहार उनकी सोच को दर्शाता है, जबकि हमारी प्रतिक्रिया हमारे व्यक्तित्व, विवेक और आत्मसंयम को प्रकट करती है।
- विश्लेषण: नकारात्मकता को अपनी शक्ति बनाएँ**
 - आलोचना: यदि कोई आलोचना

करता है, तो तुरंत क्रोधित होने के बजाय विचार करें कि क्या उसमें सुधार की कोई उपयोगी बात है। यदि हाँ, तो उससे सीखें; यदि नहीं, तो उसे अनावश्यक मानसिक बोझ न बनने दें।

- अपमान: यदि कोई अपमानित करने का प्रयास करता है, तो उसके व्यवहार के कारण अपनी आत्मसम्मान की भावना को कमजोर न होने दें।
- असफलता: यदि किसी कार्य में असफलता मिलती है, तो स्वयं को दोष देने के बजाय उससे सीख लेकर दोबारा प्रयास करें।
- नकारात्मक अनुभव: उन्हें मन पर स्थायी बोझ बनाने के बजाय उन्हें सीख, समझ और आत्मविकास का माध्यम बनाएँ।
- मुख्य सूत्र: क्रोध को विवेकपूर्ण दृढ़ता में, निराशा को नए संकल्प में, असफलता को अनुभव में और कठिनाइयों को आत्मविश्वास तथा धैर्य विकसित करने के अवसर में बदलना सीखें।
- अपने मन और भावनाओं के स्वामी बनें दूसरों को यह अधिकार न दें कि वे अपने व्यवहार से आपकी मानसिक शांति, आत्मविश्वास और जीवन की खुशियों को पूरी तरह नियंत्रित करने लगें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें अपनी भावनाओं को दबा देना चाहिए या हर अन्याय को चुपचाप सहन करना चाहिए। वास्तविक अर्थ है — अपनी भावनाओं को पहचानना, उनके कारणों को समझना और सोच-

समझकर उचित प्रतिक्रिया देना।

कभी मौन रहना समझदारी है, कभी स्पष्ट रूप से अपनी बात रखना आवश्यक है और कभी किसी नकारात्मक व्यक्ति से उचित दूरी बना लेना ही सबसे अच्छा विकल्प होता है।

हर बात का जवाब देना आवश्यक नहीं, हर बहस में जीतना जरूरी नहीं और हर व्यक्ति को अपनी सोच के अनुसार संबलना संभव नहीं है।

- सकारात्मक जीवनशैली अपनाएँ - मुख्य बिन्दु**
 - नियमित व्यायाम, पैदल चलना, योग और ध्यान अपनाएँ।
 - मधुर संगीत, प्रकृति, पेड़-पौधों और पक्षियों के सान्निध्य का आनंद लें
 - परिवार और अच्छे मित्रों के साथ प्रेमपूर्ण संबंध बनाए रखें
 - प्रतिदिन कुछ नया सीखें और अपनी जिज्ञासा को जीवित रखें
 - कृतज्ञता, करुणा, क्षमा और मानवता की भावना विकसित करें
 - अपनी सीमाओं को पहचानें और आवश्यकता पड़ने पर विनम्रता से 'नहीं' कहना सीखें
 - दूसरों की सहायता करें, लेकिन अपनी मानसिक शांति और गरिमा की कीमत पर नहीं
 - अपनी ऊर्जा उन कार्यों में लगाएँ जो आपके स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, संबंधों और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं
 - 5. स्वास्थ्य तथ्य: सकारात्मकता और शारीरिक स्वास्थ्य का संबंध

सकारात्मक सोच बनाए रखना केवल मानसिक शांति के लिए नहीं, बल्कि उच्च रक्तचाप (Hypertension), दिल की बीमारियाँ, हार्ट अटैक, स्ट्रोक और लकवा (Paralysis) जैसी गंभीर बीमारियों से बचने के लिए भी आवश्यक है। नकारात्मक तनाव, क्रोध और निराशा का सीधा असर रक्तचाप और हृदय पर पड़ता है।

6. जीवन का मूल मंत्र नकारात्मकता से लड़ते रहने में अपनी बहुमूल्य ऊर्जा नष्ट करने के बजाय उसे अपने विकास, स्वास्थ्य, परिवार, ज्ञान और मानवता की सेवा में लगाएँ।

अपने मन को कदुता से नहीं, करुणा से भरें। अपने विचारों को भय से नहीं, विवेक से दिशा दें। अपने व्यवहार को क्रोध से नहीं, आत्मसंयम से संचालित करें।

निष्कर्ष: सकारात्मक होने का अर्थ समस्याओं की अनदेखी करना नहीं है। इसका अर्थ है समस्याओं को स्वीकार करके उनके व्यावहारिक समाधान खोजने का प्रयास करना। आप हर परिस्थिति को नहीं बदल सकते, हर व्यक्ति की सोच को नहीं बदल सकते और अतीत को वापस नहीं ला सकते। लेकिन आप वर्तमान में अपने विचारों, निर्णयों और व्यवहार को बेहतर बनाने की दिशा में कदम उठा सकते हैं।

सकारात्मक सोचें। विवेकपूर्ण व्यवहार करें। स्वस्थ रहें। प्रसन्न रहें। दूसरों के जीवन में भी खुशियाँ बाँटें।

खरीफ फसलों की उपज खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता सर्वोपरि : डीसी

जिलाभर की अनाज मंडियों में प्रशासनिक अधिकारियों ने लिया खरीफ फसल व्यवस्थाओं का जायजा

मंडियों में गेट पास, सीसीटीवी निगरानी, फसल उठान और अटल कैटीन सहित सुविधाओं का किया निरीक्षण
प्रशासनिक अधिकारियों ने किसानों व आदतियों की समस्याएं सुनकर प्राथमिकता से समाधान करने के निर्देश

झज्जर, 12 अक्टूबर। झज्जर जिला की अनाज मंडियों में बाजरा व धान खरीद प्रक्रिया को सुचारू, पारदर्शी और किसान हितैषी बनाने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सजग है। डीसी वर्षा खांगवाल के निर्देशानुसार सोमवार को जिला की झज्जर, बहादुरगढ़, बेरी अनाज मंडियों में संबंधित एसडीएम ने पहुंचकर खरीफ उपज व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने मंडियों में बाजरे व धान की आवक, खरीद प्रक्रिया, गुणवत्ता जांच, फसल उठान और किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं का जायजा लिया। साथ ही किसानों और



आदतियों से बातचीत की। गेट पास से लेकर फसल उठान तक हर व्यवस्था पर नजर निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने गेट पास जारी करने की प्रक्रिया, सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से निगरानी, खरीद कार्य की स्थिति और मंडियों में फसल उठान की व्यवस्था की

जांच की। उन्होंने स्पष्ट किया कि खरीद प्रक्रिया में निर्धारित नियमों की पालना सुनिश्चित की जाए और प्रत्येक स्तर पर पारदर्शिता बरती जाए। किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए अनावश्यक इंतजार न करना पड़े तथा खरीद के बाद फसल का उठान समय पर हो, इसके लिए संबंधित विभाग आपसी समन्वय

के साथ काम करें। मंडियों में प्रशासनिक अधिकारियों ने किया निरीक्षण सोमवार को झज्जर अनाज मंडी में एसडीएम रवि मीणा ने बाजरा खरीद व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। वहीं बहादुरगढ़ अनाज मंडी में



एसडीएम अभिनव सिवाच ने खरीद प्रक्रिया, गेट पास व्यवस्था और किसानों को उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। बेरी अनाज मंडी में एसडीएम रेणुका नांदल ने बाजरा खरीद, फसल उठान और मंडी में किसानों के लिए किए गए प्रबंधों का निरीक्षण किया। किसानों को अनाज मंडी में न हो

कोई परेशानी डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंडियों में किसानों के लिए स्वच्छ पेयजल, साफ-सफाई, शौचालय और अटल कैटीन सहित सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध रहें। मंडियों में खरीद और उठान कार्य में तेजी बनाए रखी जाए, ताकि फसल का

अनावश्यक जमाव न हो और किसानों को अपनी उपज बेचने में परेशानी न आए। अधिकारी नियमित रूप से मंडियों की व्यवस्थाओं की निगरानी करें और किसानों व आदतियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए उनका प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित करें।

सेवा संकल्प अभियान के तहत औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न गतिविधियां जारी



कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग के तत्वावधान में सेवा मेरा योगदान थीम पर 'स्वच्छता ही सेवा' तथा 'वोकल फॉर लोकल' कार्यक्रम आयोजित

झज्जर, 12 अक्टूबर। जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के दिशा निर्देश अनुसार सेवा संकल्प अभियान के तहत निरंतर

गतिविधियां जारी हैं। प्राचार्य एवं जिला नोडल अधिकारी जीतपाल ने बताया कि सोमवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर एट गुढ़ा में सेवा मेरा योगदान थीम पर स्वच्छता ही सेवा एक्टिविटी का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त स्टोफ सदस्यों तथा प्रशिक्षार्थियों द्वारा श्रमदान किया गया। इस सफाई अभियान



में संस्थान के मुख्य गेट से प्रांगण तक सफाई की गई और स्वच्छता का महत्व समझाया गया। इसके अतिरिक्त राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर महिला, बहादुरगढ़, खुड्डन, जहांगीरपुर, मातनहेल, साल्हावास तथा अन्य संस्थानों में भी सेवा मेरा योगदान थीम पर स्वच्छता ही सेवा के तहत सफाई अभियान चलाया गया। उन्होंने बताया कि इसके

अतिरिक्त राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान दूबलधन, छारा, झज्जर (महिला), साल्हावास, भापडौदा तथा जहांगीरपुर में रेवोकल फॉर लोकल र कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य दैनिक जीवन में स्थानीय स्तर पर निर्मित वस्तुओं के स्टोफ सदस्यों तथा प्रशिक्षार्थियों ने बड़-चढ़ के भाग लिया।

स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए स्थानीय कारीगरों, बुनकरों, शिल्पकारों और लघु उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं को खरीदने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलती है तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं। दोनों कार्यक्रमों में संस्थानों के स्टोफ सदस्यों तथा प्रशिक्षार्थियों ने बड़-चढ़ के भाग लिया।



कहा कि बेरी का इतिहास काफी पुराना है। एक साथ देवी माता के दो मंदिर होना अपने आप में एक इतिहास है। इन मंदिरों में महर्षि दुर्वासा के समय की पूजा पद्धति का आज भी अनुशरण हो रहा है, यह सराहनीय है। दूसरी ओर सोमवार को द्वितीय नवरात्र पर माता के जयकारे लगाकर दूरदराज से आए भक्तों ने मां भगवती के दर्शन किये और

मनोकामना की। आगामी 19 अक्टूबर तक चलने वाले नवरात्र मेला के चलते डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में प्रशासन द्वारा आवश्यक प्रबंध किए गए हैं। वहीं माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ व एसडीएम रेणुका नांदल ने सोमवार को मंदिर परिसर का जायजा लिया। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग सहित सम्बंधित अधिकारियों को जरूरी निर्देश भी दिए।

एसआईआर 2026 : कोई भी योग्य मतदाता न छूटे नोटिस एवं सुनवाई मामलों के समयबद्ध निपटान पर फोकस : डीसी



परिवहन विशेष न्यूज जिलाभर में गत दिनों चलाए गए विशेष अभियान के तहत मतदाताओं को मिले नोटिस एवं सुनवाई से संबंधित मामलों के समयबद्ध निस्तारण पर निर्वाचन आयोग और प्रशासन का विशेष फोकस है। गत 9 अक्टूबर तक तीन दिन तक चले विशेष शिविरों व घर-घर सर्वे में लंबित मामलों की सुनवाई की गई है। यह जानकारी डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने सोमवार को दी।

उन्होंने बताया कि मतदाता सूची को अधिक पारदर्शी बनाने के लिए जिलाभर में सभी 807 मतदान केंद्रों के लिए बूथ लेवल एजेंट, सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारी और 4 निर्वाचक पंजीयन अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। डीसी ने बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा लंबित मामलों की नियमित समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को लंबित सुनवाई मामलों के शीघ्र निस्तारण, प्रभावी मॉनिटरिंग व निर्धारित प्रक्रिया के

अनुसार कार्रवाई सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। डीसी ने बताया कि बीएलओ नोटिस की सुनवाई समय पर समाप्त करने के लिए वोटरों से दस्तावेज प्राप्त करें, जहां पर नोटिस प्राप्त होने पर अभी तक सम्बन्धित मतदाताओं द्वारा आवश्यक दस्तावेज जमा नहीं करवाये गए हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने ऐसे सभी पात्र मतदाताओं से अपील की है कि जिन्होंने अभी तक दस्तावेज जमा नहीं करवाए हैं वे अपने

दस्तावेज बुल लेवल अधिकारी को जमा करवाएं ताकि सभी योग्य मतदाताओं के नाम 6 नवम्बर 2026 को प्रकाशित होने वाली अंतिम मतदाता सूची में शामिल हो सकें। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की शिकायत है तो वे बेंडिशक सम्बंधित बीएलओ, सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारी और निर्वाचक पंजीयन अधिकारी से भी संपर्क कर सकते हैं।

समाधान शिविर में आमजन की समस्याओं का हो रहा स्थाई समाधान : एडीसी

-जिलास्तरीय समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास ने सुनी लोगों की समस्याएं, अधिकारियों को दिए त्वरित कार्रवाई के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज झज्जर, 12 अक्टूबर। आमजन की समस्याओं का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन पूरी सजगता व गंभीरता के साथ कार्य कर रहा है। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जिला व उपमंडल स्तर पर आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर नागरिकों की समस्याओं के निवारण के लिए प्रभावी मंच साबित हो रहे हैं। यह बात एडीसी जगनिवास ने सोमवार को लघु सचिवालय सभागार में आयोजित समाधान शिविर में जनसुनवाई के दौरान कही। उन्होंने शिविर में पहुंचे नागरिकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। नागरिकों को उनकी

समस्याओं के समाधान के लिए सरल और प्रभावी माध्यम उपलब्ध करवाना ही उद्देश्य एडीसी ने कहा कि प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को आयोजित होने वाले समाधान शिविरों का उद्देश्य नागरिकों को उनकी समस्याओं के समाधान के लिए सरल और प्रभावी माध्यम उपलब्ध करवाना है। इन शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी एक ही स्थान पर उपस्थित रहते हैं, जिससे नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार अंत्योदय की भावना के साथ जनसेवा को प्राथमिकता दे रही है। मुख्यमंत्री की सोच के अनुरूप प्रशासन का प्रयास है कि प्रत्येक नागरिक की समस्या को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ सुना जाए तथा उसका शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए। लंबित शिकायतों को आपसी समन्वय से करें समाधान एडीसी जगनिवास ने कहा कि



जिला प्रशासन द्वारा समाधान शिविरों में प्राप्त शिकायतों की लगातार निगरानी की जा रही है। अब तक प्राप्त अधिकांश शिकायतों का समाधान किया जा चुका है, जबकि लंबित शिकायतों के निपटारे के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायतों को केवल दर्ज करने तक सीमित न रखें, बल्कि उनके समाधान की प्रक्रिया पर भी नियमित नजर रखें। परिवार पहचान पत्र, राशन कार्ड और पेंशन से जुड़े मामले

पहुंचे समाधान शिविर में नागरिक परिवार पहचान पत्र, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं से संबंधित समस्याएं लेकर पहुंचे। इसके अलावा पुलिस विभाग से जुड़े मामलों को भी नागरिकों ने अधिकारियों के समक्ष रखा। एडीसी ने संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक मामले की गंभीरता से जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कई मामलों में मौके पर ही आवश्यक

समाधान सुनिश्चित किया गया। एडीसी ने कहा कि समाधान शिविरों का उद्देश्य केवल शिकायतों को सुनना नहीं, बल्कि नागरिकों को प्रभावी समाधान उपलब्ध करवाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन को समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहते हुए निर्धारित समय में कार्रवाई पूरी करें। इस अवसर पर सीटीएम ऋ. डीडीपीओ निशा तंवर, नायब तहसीलदार अंसुल, एमिनेन्ट पर्सन दया किशन जांगड़ा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सरकार की योजनाओं के लाभार्थी बनने सेवा सेतु कैंप पहुंचे ग्रामीण गांव ढाकला में मुख्य अतिथि समाजसेवी मनोज धनखड़ ने सेवा सेतु कैम्प का किया अवलोकन डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में विभिन्न विभागों ने स्टॉल लगाकर दी योजनाओं की जानकारी समस्त क्षेत्रवासियों ने सरकारी सेवाओं, जनकल्याणकारी योजनाओं व स्वास्थ्य जांच का उठाया लाभ धनखड़ ने सेवा सेतु कैम्प का शुभारंभ किया। कैम्प में पहुंचने पर बीडीपीओ साल्हावास राहुल मेहरा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कैम्प में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त की और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर जिला में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैंप लगाकर लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है। नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की दी जानकारी मुख्य अतिथि मनोज धनखड़ ने बताया कि कैम्प में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाए गए, जहां विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी जा रही है। नागरिकों को योजनाओं के लिए निर्धारित पात्रता, आवेदन प्रक्रिया तथा मिलने वाले लाभों के बारे में भी विस्तार से बताया गया। कैम्प में पहुंचने वाले लोगों को समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया गया। स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ

जीवनशैली के लिए किया प्रेरित सेवा सेतु कैंप में स्वास्थ्य एवं आयुष विभाग की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया। यहां नागरिकों की स्वास्थ्य जांच करने के साथ उन्हें स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ जीवनशैली तथा आयुष पद्धति से संबंधित आवश्यक जानकारी एवं परामर्श दिया गया। इससे कैंप में आने वाले नागरिकों को सरकारी योजनाओं की जानकारी के साथ स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का भी लाभ मिला। कैंप में विभिन्न योजनाओं से संबंधित जानकारी लेने के लिए नागरिकों में उत्साह देखने को मिला। लोगों ने विभागीय स्टॉल पर पहुंचकर अपनी जरूरत के अनुसार जानकारी प्राप्त की तथा पात्रता के आधार पर योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यक प्रक्रिया को समझा। अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने आमजन को सरकारी योजनाओं का अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ग्रामीणों से आह्वान किया कि वे प्रशासन की ओर से शेड्यूल अनुसार सेवा सेतु कैंप में पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त करें और अपनी पात्रता के अनुसार सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाएं।

महिलाओं की मेहनत को मिले सम्मान: वेतन से परे उनके योगदान की पहचान



महिलाओं की मेहनत को वास्तविक महत्त्व देने के लिए समान मूल्य के काम के लिए समान वेतन, निष्पक्ष भर्ती प्रक्रिया, सुरक्षित कार्यस्थल और नेतृत्व के पदों तक पहुँच आवश्यक है। महिलाओं का मूल्यांकन उनकी योग्यता, शिक्षा, कार्यक्षमता और उपलब्धियों के आधार पर होना चाहिए, न कि लिंग से जुड़ी पुरानी धारणाओं या पारिवारिक जिम्मेदारियों के आधार पर।

डॉ. विजय गर्ग

बेटी केवल परिवार की सदस्य नहीं होती, बल्कि वह एक प्रतिशोली समाज की नींव और उज्ज्वल भविष्य की निर्माता होती है। जब एक लड़की शिक्षा प्राप्त करती है, तो उसे केवल ज्ञान ही नहीं मिलता, बल्कि उसके भीतर आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और अपने भविष्य को स्वयं संभालने का साहस भी विकसित होता है। शिक्षित बेटी न केवल अपने परिवार, बल्कि समाज और राष्ट्र की तस्वीर भी बदल सकती है। इसलिए यह संदेश कि "बेटी पढ़ेगी, दुनिया बदलेगी" अत्यंत गहरा अर्थ रखता है।

शिक्षा: बेटी का अधिकार, कोई विशेष सुविधा नहीं

सदियों से अनेक समाजों में लड़कियों को गरीबी, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियों और पुरानी सोच के कारण शिक्षा प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करना पड़ा है। कुछ परिवारों में बेटी को पढ़ाई को निवेश माना जाता है, जबकि बेटीयों से केवल घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाने की अपेक्षा की जाती है। ऐसी सोच लड़कियों की प्रतिभा और क्षमताओं को सीमित करती है तथा समाज को उनके योगदान से वंचित रखती है।

शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है, चाहे वह लड़का हो या लड़की। बेटीयों को सीखने, अपनी रुचियों को विकसित करने, क्षमताओं को निखारने और अपने सपनों को पूरा करने के समान अवसर मिलने चाहिए। केवल लड़की होने के कारण किसी बेटी को अपनी महत्वाकांक्षाओं का त्याग नहीं करना चाहिए।

जो समाज अपनी बेटीयों को शिक्षित करता है, वह वास्तव में अपनी प्रगति में निवेश करता है। कोई भी राष्ट्र तब तक स्थायी विकास नहीं कर सकता, जब तक उसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा के अवसरों से वंचित रहता है।

शिक्षित बेटी बदल देती है परिवार की तस्वीर

एक शिक्षित बेटी का प्रभाव सबसे पहले उसके अपने घर से शुरू होता है। वह सही

महिलाएँ परिवारों, समुदायों और अर्थव्यवस्था में अनगिनत तरीकों से योगदान देती हैं। वे कार्यालयों, स्कूलों, अस्पतालों, कारखानों, खेलों और व्यावसायिक संस्थानों में काम करती हैं। इसके साथ ही वे खाना बनाती हैं, बच्चों का पालन-पोषण करती हैं, बुजुर्गों की देखभाल करती हैं, घर संचालती हैं और परिवार के सदस्यों को भावनात्मक सहारा देती हैं। फिर भी, उनके योगदान का एक बड़ा हिस्सा अक्सर अनदेखा, उपेक्षित या कम महत्वपूर्ण समझा जाता है। असली चुनौती केवल महिलाओं को काम करने के अवसर देना नहीं, बल्कि उनकी मेहनत को उचित सम्मान और पहचान दिलाना है।

सदियों से समाज में काम के महत्व को वेतन, पदोन्नति और आर्थिक लाभ के आधार पर मापा जाता रहा है। इस सीमित सोच के अनुसार, कार्यालय में काम करने वाली महिला को आर्थिक रूप से उत्पादक माना जाता है, जबकि पूरे दिन घर संचालने वाली महिला को कभी-कभी बेरोजगार कह दिया जाता है। यह सोच घरेलू कामकाज और देखभाल की उस महत्वपूर्ण भूमिका की अनदेखी करती है, जिसके सहारे परिवार चलते हैं और समाज के अन्य सदस्य रोजगार कर पाते हैं।

महिलाओं की अदृश्य अर्थव्यवस्था

एक ऐसी महिला के बारे में सोचिए, जो सुबह जल्दी उठती है, खाना बनाती है, बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार करती है, बुजुर्ग माता-पिता को देखभाल करती है, घर के काम निपटाती है और फिर अपनी नौकरी पर जाती है। शाम को घर लौटने के बाद उसकी जिम्मेदारियाँ फिर शुरू हो जाती हैं। उसका कार्यदिवस अक्सर उन घंटों से कहीं अधिक लंबा होता है, जिनका हिसाब उसका नियोजता रखता है।

इसी तरह, ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों महिलाएँ कृषि कार्यों में योगदान देती हैं। वे बीज बोती हैं, पौधों की रोपाई करती हैं, पशुओं के लिए चारा एकत्र करती हैं, पशुधन की देखभाल करती हैं, अनाज का भंडारण करती हैं और फसल को कटाई में भाग लेती हैं। उनकी मेहनत कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है, लेकिन इसका पूरा मूल्य हमेशा उनकी मजदूरी, भूमि के स्वामित्व या उनकी फसल के लिए अधिकारों में दिखाई नहीं देता।

बिना वेतन वाला काम बेकार या महत्वहीन काम नहीं होता। यही मेहनत परिवारों, समाज और संस्थानों के संचालन की नींव बनती है। महिलाओं के इस योगदान को पहचानना एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में पहला कदम है।

भागीदारी से सम्मान तक

कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी प्रगति का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, लेकिन केवल रोजगार मिल जाने से समानता सुनिश्चित नहीं होती। नौकरी करने के बावजूद महिलाओं को कम वेतन, कामकाज और देखभाल की उस महत्वपूर्ण भूमिका की अनदेखी करती है, जिसके सहारे परिवार चलते हैं और समाज के अन्य सदस्य रोजगार कर पाते हैं।

महिलाओं की मेहनत को वास्तविक महत्त्व देने के लिए समान मूल्य के काम के लिए समान वेतन, निष्पक्ष भर्ती प्रक्रिया, सुरक्षित कार्यस्थल और नेतृत्व के पदों तक पहुँच आवश्यक है। महिलाओं का मूल्यांकन उनकी योग्यता, शिक्षा, कार्यक्षमता और उपलब्धियों के आधार पर होना चाहिए, न कि लिंग से जुड़ी पुरानी धारणाओं या पारिवारिक जिम्मेदारियों के आधार पर।

रोजगार के अवसर केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं रहने चाहिए। ग्रामीण महिलाओं को व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, ऋण सुविधाओं, बाजारों और उद्यमिता के लिए सहायता उपलब्ध होनी चाहिए। प्रशिक्षण ऐसा होना चाहिए, जो महिलाओं को अपने ज्ञान और कौशल के माध्यम से स्थायी आजीविका अर्जित करने में सक्षम बनाए।

दोहरी जिम्मेदारियों का बोझ

महिलाओं के व्यावसायिक विकास में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक घरेलू जिम्मेदारियों का असमान वितरण है। जब पति-पत्नी दोनों कमाते हैं, तब भी खाना बनाने, सफाई करने, बच्चों की देखभाल करने और बुजुर्गों की सेवा करने का बड़ा हिस्सा अक्सर महिलाओं के जिम्मे ही रहता है।

यह दोहरा बोझ उनके आराम, व्यावसायिक विकास, सामाजिक भागीदारी और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के लिए

उपलब्ध समय को कम कर देता है। कई बार प्रतिभाशाली महिलाओं को नौकरी छोड़नी पड़ती है या अपनी योग्यता से कम अवसरों वाला काम स्वीकार करना पड़ता है।

इसका समाधान यह नहीं है कि महिलाओं से अपनी अनगिनत जिम्मेदारियों को और बेहतर ढंग से निभाने की अपेक्षा की जाए। परिवारों में घरेलू कामों का न्यायपूर्ण बँटवारा होना चाहिए। पुरुषों को बच्चों की परवरिश और घर के प्रबंधन में समान भागीदारी निभानी चाहिए। साथ ही, संस्थानों को जहाँ संभव हो, लचीले कार्यसमय की सुविधा देनी चाहिए।

सस्ती बाल-देखभाल सेवाएँ, सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएँ, माता-पिता के लिए वेतन सहित अवकाश और बुजुर्गों की सम्मानजनक देखभाल की व्यवस्थाएँ परिवारों को नौकरी और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाने में सहायता कर सकती हैं। इन उपायों का लाभ केवल महिलाओं की ही नहीं, बल्कि बच्चों, पुरुषों, नियोजताओं और पूरे समाज को मिलता है।

तकनीकी अवसर भी, चुनौती भी

डिजिटल तकनीक ने महिलाओं के लिए सीखने, कमाने और उद्यमी बनने के नए रास्ते खोले हैं। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल भुगतान, घर से काम करने की सुविधाएँ और इंटरनेट के माध्यम से व्यापार छोटे शहरों और गाँवों की महिलाओं के लिए भौगोलिक दूरी की बाधाओं को कम कर सकते हैं।

आज कोई महिला नए कौशल सीख सकती है, पेशेवर सेवाएँ दे सकती है, हस्तनिर्मित वस्तुएँ बेच सकती है या घर से अपना छोटा व्यवसाय चला सकती है। लेकिन इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए विश्वसनीय इंटरनेट, उपयुक्त डिजिटल उपकरण, तकनीकी ज्ञान और वित्तीय समझ

आवश्यक है।

तकनीक के साथ कुछ नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। ऑनलाइन उर्पीडन, असुरक्षित अस्थायी रोजगार, अत्यधिक कार्यघंटे और सामाजिक सुरक्षा का अभाव महिलाओं को शोषण के नए रूपों के प्रति संवेदनशील बना सकते हैं। इसलिए डिजिटल समावेशन के साथ सुरक्षा, प्रशिक्षण, उचित पारिश्रमिक और शिकायतों के निवारण की व्यवस्था भी आवश्यक है।

तकनीक का उद्देश्य महिलाओं को पसंद और अवसरों का विस्तार करना होना चाहिए, न कि उनकी मेहनत का मूल्य घटाने का एक और साधन बनना।

बिना वेतन वाले देखभाल कार्य का महत्व

महिलाओं के योगदान को पहचानने के लिए घरेलू कामों और देखभाल में लगने वाले समय का सही आकलन करना आवश्यक है। समय-उपयोग सर्वेक्षणों के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि महिलाएँ और पुरुष घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल तथा आश्रित परिवारजनों की सेवा में कितना समय लगाते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेम, स्नेह या पारिवारिक जिम्मेदारियों के हर कार्य को पैसों में बदल दिया जाए। इसका उद्देश्य श्रम के वास्तविक वितरण को समझना और लोगों की जरूरतों के अनुसार बेहतर सार्वजनिक सेवाओं की योजना बनाना है।

जब महिलाएँ बुनियादी सुविधाओं के अभाव में पानी या ईंधन लाने के लिए कई घंटे बिताती हैं, तो उनका बिना वेतन वाला कार्यभार और बढ़ जाता है। स्वच्छ पानी, बिजली, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छता और सामुदायिक बाल-देखभाल की सुविधाएँ उनका समय बचा सकती हैं। इससे शिक्षा, रोजगार, आराम और व्यक्तिगत विकास के लिए अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं।

इसलिए महिलाओं को मेहनत को पहचानना केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उनके जीवन और कार्य परिस्थितियों में वास्तविक सुधार लाना चाहिए।

आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने का अधिकार

आय अर्जित करना महत्वपूर्ण है, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ केवल वेतन प्राप्त करना नहीं है। महिलाओं को अपनी कमाई पर नियंत्रण, बैंक खातों तक पहुँच, बचत और निवेश के अवसर तथा पारिवारिक संपत्ति और खर्चों से संबंधित निर्णयों में सार्थक भूमिका मिलनी चाहिए। संपत्ति और विरासत के अधिकार भी महत्वपूर्ण हैं। यदि कोई महिला पारिवारिक व्यवसाय या कृषि कार्य में योगदान देती है, तो केवल इसलिए कि उसकी मेहनत के लिए सवामित्व या वित्तीय निर्णयों से बाहर नहीं रखा जाना चाहिए।

वित्तीय साक्षरता महिलाओं को धन का प्रबंधन करने, जोखिमों को समझने और भविष्य की योजना बनाने में आत्मविश्वास प्रदान करती है। स्वयं सहायता समूह, प्रशिक्षण, उचित पारिश्रमिक और शिकायतों के निवारण की व्यवस्था भी आवश्यक है।

तकनीक का उद्देश्य महिलाओं को पसंद और अवसरों का विस्तार करना होना चाहिए, न कि उनकी मेहनत का मूल्य घटाने का एक और साधन बनना।

बिना वेतन वाले देखभाल कार्य का महत्व

महिलाओं के योगदान को पहचानने के लिए घरेलू कामों और देखभाल में लगने वाले समय का सही आकलन करना आवश्यक है। समय-उपयोग सर्वेक्षणों के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि महिलाएँ और पुरुष घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल तथा आश्रित परिवारजनों की सेवा में कितना समय लगाते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेम, स्नेह या पारिवारिक जिम्मेदारियों के हर कार्य को पैसों में बदल दिया जाए। इसका उद्देश्य श्रम के वास्तविक वितरण को समझना और लोगों की जरूरतों के अनुसार बेहतर सार्वजनिक सेवाओं की योजना बनाना है।

जब महिलाएँ बुनियादी सुविधाओं के अभाव में पानी या ईंधन लाने के लिए कई घंटे बिताती हैं, तो उनका बिना वेतन वाला कार्यभार और बढ़ जाता है। स्वच्छ पानी, बिजली, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छता और सामुदायिक बाल-देखभाल की सुविधाएँ उनका समय बचा सकती हैं। इससे शिक्षा, रोजगार, आराम और व्यक्तिगत विकास के लिए अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं।

पारिवारिक जिम्मेदारियों के विपरीत न माना जाए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज को महिलाओं के सपनों और आकांक्षाओं को वैकल्पिक या गैर-जरूरी समझना बंद करना चाहिए, जबकि पुरुषों के करियर को आवश्यक माना जाता है।

न्यायपूर्ण भविष्य के लिए साझा जिम्मेदारी

महिलाओं की मेहनत को उचित सम्मान दिलाने के लिए कई स्तरों पर प्रयास करने होंगे। सरकारों को श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा, बुनियादी ढाँचे में सुधार और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा बाल-देखभाल की सुविधाओं का विस्तार करना चाहिए। नियोजताओं को उचित वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और उन्नति के समान अवसर सुनिश्चित करने चाहिए। परिवारों को घरेलू जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा करना चाहिए और समुदायों को भेदभावपूर्ण धारणाओं को बदलने के लिए आगे आना चाहिए।

प्रगति को केवल इस आधार पर नहीं मापना चाहिए कि कितनी महिलाएँ रोजगार में शामिल हुई हैं। यह भी देखना चाहिए कि उन्हें किस प्रकार की नौकरियाँ मिलती हैं, उनकी आय कितनी है, वे कितनी सुरक्षित हैं, संसाधनों पर उनकी कितना अधिकार है और अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने की उन्हें कितनी स्वतंत्रता है।

जो समाज महिलाओं के योगदान को पहचानता है, वह अधिक उत्पादक, संवेदनशील और मजबूत बनता है। जब महिलाओं की मेहनत का मूल्य कम आँका जाता है, तो समाज अपनी ही शक्ति के एक बड़े हिस्से की अनदेखी करता है। जब उनके योगदान को मान्यता और आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं, तो इसके लाभ कई पीढ़ियों तक पहुँचते हैं।

अंततः, महिलाओं की मेहनत को महत्त्व देने का अर्थ उन पर कोई विशेष उपकार करना नहीं, बल्कि न्याय, सम्मान और समान अवसर सुनिश्चित करना है। मेहनत का हर घंटा सम्मान का अधिकारी है, हर प्रतिभा पर उनकी कसबत होने का अवसर मिलना चाहिए और हर महिला को अपना भविष्य स्वयं ढढ़ने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। कोई राष्ट्र केवल तब प्रगति नहीं करता, जब महिलाओं को काम करने की अनुमति मिलती है, बल्कि वास्तविक प्रगति तब होती है, जब उनकी मेहनत का मूल्य समझा जाता है, उनकी आवाज सुनी जाती है और उनकी उपलब्धियों को उचित सम्मान मिलता है।

डॉ. विजयगर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम एच आर मलोट, पंजाब — 152107

बेटी पढ़ेगी, दुनिया बदलेगी—बेटियों से ही रोशन होगा कल

डॉ. विजय गर्ग

बेटी केवल परिवार की सदस्य नहीं होती, बल्कि वह एक प्रतिशोली समाज की नींव और उज्ज्वल भविष्य की निर्माता होती है। जब एक लड़की शिक्षा प्राप्त करती है, तो उसे केवल ज्ञान ही नहीं मिलता, बल्कि उसके भीतर आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और अपने भविष्य को स्वयं संभालने का साहस भी विकसित होता है। शिक्षित बेटी न केवल अपने परिवार, बल्कि समाज और राष्ट्र की तस्वीर भी बदल सकती है। इसलिए यह संदेश कि "बेटी पढ़ेगी, दुनिया बदलेगी" अत्यंत गहरा अर्थ रखता है।

शिक्षा: बेटी का अधिकार, कोई विशेष सुविधा नहीं

सदियों से अनेक समाजों में लड़कियों को गरीबी, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियों और पुरानी सोच के कारण शिक्षा प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करना पड़ा है। कुछ परिवारों में बेटी को पढ़ाई को निवेश माना जाता है, जबकि बेटीयों से केवल घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाने की अपेक्षा की जाती है। ऐसी सोच लड़कियों की प्रतिभा और क्षमताओं को सीमित करती है तथा समाज को उनके योगदान से वंचित रखती है।

शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है, चाहे वह लड़का हो या लड़की। बेटीयों को सीखने, अपनी रुचियों को विकसित करने, क्षमताओं को निखारने और अपने सपनों को पूरा करने के समान अवसर मिलने चाहिए। केवल लड़की होने के कारण किसी बेटी को अपनी महत्वाकांक्षाओं का त्याग नहीं करना चाहिए।

जो समाज अपनी बेटीयों को शिक्षित करता है, वह वास्तव में अपनी प्रगति में निवेश करता है। कोई भी राष्ट्र तब तक स्थायी विकास नहीं कर सकता, जब तक उसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा के अवसरों से वंचित रहता है।

शिक्षित बेटी बदल देती है परिवार की तस्वीर

एक शिक्षित बेटी का प्रभाव सबसे पहले उसके अपने घर से शुरू होता है। वह सही

निर्णय लेने, स्वास्थ्य और पोषण को समझने, आर्थिक जिम्मेदारियाँ निभाने तथा परिवार के छोटे सदस्यों का मार्गदर्शन करने में सक्षम होती है। अपनी शिक्षा और मेहनत के बल पर वह शिक्षिका, डॉक्टर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, उद्यमी, प्रशासनिक अधिकारी या समाजसेवी बन सकती है।

शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है और उन्हें अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने, परिवार की आय में योगदान देने और कठिन परिस्थितियों का आत्मविश्वास से सामना करने में सहायता करती है।

एक शिक्षित महिला अगली पीढ़ी की शिक्षा के महत्व को भी समझती है। वह बच्चों को प्रश्न पूछने, स्वतंत्र रूप से सोचने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है। इस प्रकार शिक्षा एक सकारात्मक परंपरा बनाती है, जिसमें ज्ञान और अवसर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं।

लेकिन बेटीयों को केवल इसलिए शिक्षित नहीं किया जाना चाहिए कि वे भविष्य में बेहतर माँ बनेंगी या घर को अच्छी तरह संचालेंगी। वे अपनी इच्छाओं, क्षमताओं और अपने भविष्य का चुनाव करने के अधिकार वाली स्वतंत्र व्यक्तित्व हैं। शिक्षा उनका अधिकार है, किसी अन्य भूमिका की तैयारी मात्र नहीं।

लैंगिक भेदभाव की बेड़ियाँ तोड़ना जरूरी

लड़कियों की शिक्षा में सबसे बड़ी बाधाएँ हमेशा आर्थिक नहीं होती। कई बार ये बाधाएँ उस सोच से उत्पन्न होती हैं, जिसमें बेटी को बेटीयों से अधिक महत्व दिया जाता है। बाल विवाह, पारिवारिक संसाधनों का असमान वितरण, आने-जाने पर प्रतिबंध और घरेलू कामों का अत्यधिक बोझ लड़कियों की पढ़ाई में रुकावट बन सकते हैं।

इन समस्याओं को दूर करने के लिए जागरूकता, परिवार का सहयोग, जिम्मेदार समाज और प्रभावी सरकारी नीतियाँ आवश्यक हैं। माता-पिता को बेटी की तरह बेटीयों की पढ़ाई को भी समान

महत्त्व देना चाहिए। विद्यालयों में सुरक्षित वातावरण, स्वच्छ शौचालय, उचित परिवहन सुविधाएँ तथा भेदभाव और उत्पीड़न से मुक्त माहौल होना चाहिए।

शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें लड़कियों की क्षमताओं को पहचानने, आत्मविश्वास बढ़ाने और पारंपरिक धारणाओं से आगे बढ़कर करियर चुनने के लिए प्रेरित करना चाहिए। आज प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित की गई एक लड़की कल की वैज्ञानिक, नेता या नवाचार करने वाली प्रतिभा बन सकती है।

वास्तविक समानता का अर्थ प्रत्येक बच्चे की जरूरतों की अनदेखी करके सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक बच्चे को सफल होने के लिए आवश्यक सहायता और अवसर प्रदान करना है।

परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका

शिक्षित समाज की शुरुआत घर से होती है। माता-पिता को अपनी बेटीयों की बातें सुनी चाहिए, उनके विचारों को सम्मान करना चाहिए और उन्हें अपने जीवन से जुड़े निर्णयों में भाग लेने का अवसर देना चाहिए। बेटीयों की तुलना बेटों से करके उन्हें कमतर आँकने या गणित, विज्ञान और तकनीक जैसे विषय चुनने से हतोत्साहित करने वाली सोच बदलना आवश्यक है।

विद्यालयों का काम केवल पाठ्यपुस्तकें पढ़ाने और परीक्षाएँ आयोजित करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। उन्हें बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, तार्किक सोच, संवाद कौशल और नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए। छात्रवृत्तियाँ, मार्गदर्शन कार्यक्रम, पुस्तकालय और डिजिटल शिक्षा की सुविधाएँ आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बेटियों को पढ़ाई जारी रखने में सहायता कर सकती हैं।

सामाजिक संस्थाएँ, स्वयंसेवी संगठन और शिक्षण संस्थान जागरूकता अभियान

चला सकते हैं, अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा सकते हैं और उन लड़कियों की मदद कर सकते हैं, जिन्हें बीच में पढ़ाई छोड़ने का खतरा है। सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षा संबंधी नीतियाँ विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से लागू हों।

मीडिया भी विभिन्न क्षेत्रों में सफलता

प्राप्त करने वाली महिलाओं की उपलब्धियों को सामने लाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कठिनाइयों को पार करके अपने लक्ष्य हासिल करने वाली बेटियों की कहानियाँ लड़कियों को भी अपने ऊपर विश्वास करने की प्रेरणा देती हैं।

डिजिटल शिक्षा: नए अवसरों

केन्द्र

तकनीक ने बेटीयों के लिए अपने गाँवों, कस्बों और विद्यालयों की सीमाओं से बाहर सीखने के नए रास्ते खोले हैं। ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय, शैक्षिक वीडियो और ऑनलाइन मार्गदर्शन के माध्यम से छात्राएँ दुनिया भर के शिक्षकों, विशेषज्ञों और शैक्षिक संसाधनों से जुड़ सकती हैं।

भौगोलिक दूरी या आर्थिक कठिनाइयों के कारण शिक्षा प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करने वाली लड़कियों के लिए डिजिटल शिक्षा विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है। लेकिन तकनीक तक पहुँच में भी समानता जरूरी है। परिवारों और संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बेटीयों के पास डिजिटल उपकरण, विश्वसनीय इंटरनेट और डिजिटल साक्षरता की सुविधा हो।

ऑनलाइन सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। लड़कियों को अपनी निजी जानकारी सुरक्षित रखने, गलत सूचनाओं को पहचानने और डिजिटल माध्यमों का जिम्मेदारी से उपयोग करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। तकनीक असमानता का नया कारण बनने के बजाय सशक्तीकरण का साधन बननी चाहिए।

कक्षा से राष्ट्र के भविष्य तक

जब लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलती है, तो इसके लाभ उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं आगे तक पहुँचते हैं। शिक्षित महिलाएँ स्वास्थ्य सेवाओं, वैज्ञानिक अनुसंधान, कृषि, व्यापार, प्रशासन, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

किसी छोटे गाँव की बेटी डॉक्टर बनकर ग्रामीण लोगों की सेवा कर सकती है। कोई अन्य शिक्षिका बनकर सैकड़ों विद्यार्थियों के जीवन को नई दिशा दे सकती है। विज्ञान की पढ़ाई करने वाली युवती अनुसंधान में योगदान दे सकती है, जबकि एक महिला उद्यमी दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है।

ये संभावनाएँ साबित करती हैं कि प्रतिभा किसी लिंग, भौगोलिक क्षेत्र या आर्थिक पृष्ठभूमि की मोहताज नहीं होती। अक्सर वास्तविक और अवसरों की उपलब्धता, प्रोत्साहन और निरंतर सहयोग से पैदा होता है।

किसी राष्ट्र की प्रगति को केवल उसकी आर्थिक वृद्धि या तकनीकी उपलब्धियों से नहीं मापा जाना चाहिए। हर लड़की को विद्यालय, पुस्तक, सहयोगी शिक्षक और उसकी क्षमताओं पर विश्वास करने वाला परिवार मिलना चाहिए। उसे अपना व्यवसाय या करियर चुनने, अपने विचार व्यक्त करने और समाज में सार्थक योगदान देने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

हमें याद रखना चाहिए कि बेटी को पढ़ाना बुरा नहीं है, बल्कि मानवीय क्षमता में निवेश है। उसके सपनों को पुरानी धारणाओं और असमान अपेक्षाओं की बेड़ियों में नहीं बाँधना चाहिए।

आइए, हम हर बेटी को शिक्षित करने, उसकी गरिमा की रक्षा करने, उसके सपनों को प्रोत्साहित करने और उसकी उपलब्धियों का सम्मान करने का संकल्प लें। ऐसा समाज बनाएँ, जहाँ किसी भी बेटी को गरीबी, भेदभाव या डर के कारण अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने के लिए मजबूर न होना पड़े।

जब एक बेटी पढ़ती है, तो परिवार मजबूत होता है। जब लाखों बेटीयें पढ़ती हैं, तो राष्ट्र आगे बढ़ता है। और जब हर लड़की को अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलता है, तो पूरी दुनिया अधिक समझदार, न्यायपूर्ण और उज्ज्वल बन जाती है।

आज की शिक्षित बेटी ही कल के सुनहरे भविष्य की नींव है।

जंगल में राख की डंपिंग पर भड़का जनाक्रोश, स्थानीय संगठन के सदस्यों ने रोके वेदांता के वाहन



कोइलिघुघर तीर्थस्थल के जलस्रोतों पर मंडराया प्रदूषण का खतरा; डंपिंग की अनुमति, मात्रा और पर्यावरणीय मानकों की जांच की मांग

रिपोर्ट ड राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र

सुंदरगढ़: * जंगल क्षेत्र में राख के चूर्ण (फ्लाई ऐश) की डंपिंग को लेकर स्थानीय स्तर पर विरोध तेज हो गया है। वेदांता से राख लेकर आ रहे वाहनों को रोककर स्थानीय संगठन के सदस्यों ने अपना विरोध दर्ज कराया। इस घटनाक्रम ने औद्योगिक अपशिष्ट के परिवहन और निस्तारण की व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।



प्रदर्शनकारियों की चिंता केवल राख की दुलाई तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका संभावित प्रभाव जंगल, जलस्रोतों और आसपास रहने वाली आबादी पर भी है।

इस विवाद का सबसे संवेदनशील पहलू प्रसिद्ध धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थल *कोइलिघुघर* के जल की शुद्धता को लेकर जताई जा रही आशंका है। स्थानीय स्तर पर यह सवाल उठ रहा है कि यदि राख का अनुचित तरीके से निस्तारण होता है, तो क्या इसका असर आसपास के जलस्रोतों और पर्यावरण पर पड़ सकता है? हालांकि, जल प्रदूषण की पुष्टि के

लिए अभी स्वतंत्र वैज्ञानिक जांच और जल के नमूनों की प्रयोगशाला रिपोर्ट आवश्यक है। केवल आशंका के आधार पर प्रदूषण को प्रमाणित नहीं माना जा सकता।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के फ्लाई ऐश प्रबंधन संबंधी दिशानिर्देशों के अनुसार, राख की दुलाई, भंडारण और निस्तारण पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों के अनुरूप होना चाहिए। कम ऊंचाई वाले भूभाग को राख से भरने के लिए भी निर्धारित तकनीकी प्रक्रियाओं और संबंधित नियामक संस्थाओं की आवश्यक अनुमति का पालन करना जरूरी है। वन क्षेत्र में



ऐसी गतिविधियों के लिए लागू वन संबंधी स्वीकृतियों की भी जांच आवश्यक है।

अब प्रशासन के सामने कई अहम सवाल हैं—राख डंपिंग के लिए संबंधित स्थल पर वैध अनुमति है या नहीं? कितनी मात्रा में राख डालने की मंजूरी दी गई है? क्या परिवहन मार्ग, धूल नियंत्रण और जलस्रोतों की सुरक्षा के मानकों का पालन किया जा रहा है?

*मांग स्पष्ट है: * जिला प्रशासन और ओडिशा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड मौके का निरीक्षण करें, अनुमति संबंधी दस्तावेज सार्वजनिक करें तथा आसपास के जलस्रोतों के नमूनों की निष्पक्ष जांच कराएं। जांच के निष्कर्षों के आधार पर जिम्मेदारी तय की जाए। औद्योगिक विकास आवश्यक है, लेकिन पर्यावरण और जनस्वास्थ्य की कीमत पर नहीं।

राज्य स्तरीय रोलर स्पोर्ट्स चैंपियनशिप के लिए वाराणसी के बीस खिलाड़ियों का चयन



इनलाइन फ्री स्टाइल टूर्नामेंट में खिलाड़ियों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन, 21 से 28 अक्टूबर तक नोएडा में होगी प्रतियोगिता

(संतोष कुमार सिंह)

वाराणसी :- नोएडा में 21 से 28 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली 12वीं राज्य स्तरीय चैंपियनशिप के लिए वाराणसी जिले के बीस खिलाड़ियों का चयन किया गया है। वाराणसी डिस्ट्रिक्ट इनलाइन फ्री स्टाइल टूर्नामेंट में खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते

हुए पदक हासिल किए और राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए अपनी जगह सुनिश्चित की।

बालक वर्ग में चयनित खिलाड़ी

कृतेश	मिश्रा, शिवांश
केशरी, अंश	केशरी, अथर्व
सिंह, प्रंजल	पाल, हर्ष
खेतान, हर्ष	केशरी, हर्ष
प्रसाद, आलोक	भारद्वाज, गणेश
सेठ, आसिफ	इकबाल, देवांश
सेठ, सल्विक	यादव, शिवाय
कुमार, हरिओम	चौरसिया और हार्दिक प्रसाद।

बालिका वर्ग में चयनित

खिलाड़ी

सैयदा अमायरा फातमा, आराध्य सिंह और वर्तिका पाण्डेय।

प्रतियोगिता के दौरान अब्दुल मतीन काजमी, डब्ल्यू पाल, सुनीता भारद्वाज, संदीप केशरी, साक्षी केशरी, दुर्गेश मिश्रा और मोहम्मद अनीस सहित कई खेल प्रेमी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक की भूमिका आनंद सेठ ने निभाई जबकि अजमल अहमद ने निर्णायक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया यह जानकारी वाराणसी के समन्वयक एहसानुल हक ने दी।।

सुंदरगढ़ में आबकारी विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल

शराब दुकानों से चारपहिया वाहनों के जरिए गांवों तक पहुंच रही विदेशी मदिरा, विभागीय अधिकारी बने मूकदर्शक! लाइसेंसी दुकानों से ग्रामीण क्षेत्रों तक शराब की कथित आपूर्ति ने खड़े किए गंभीर सवाल; निगरानी व्यवस्था, परिवहन और कार्रवाई की पारदर्शिता पर उठ रही उंगलियां



रिपोर्ट ड राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र

***सुंदरगढ़:** * जिले के ग्रामीण इलाकों में विदेशी शराब की कथित आपूर्ति को लेकर आबकारी विभाग की निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। स्थानीय समाचार पत्र जिल्ला खबर में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, शराब दुकानों से चारपहिया वाहनों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों तक मदिरा पहुंचाए जाने का आरोप सामने आया है। यदि इन आरोपों की पुष्टि होती है, तो यह केवल अवैध कारोबार का मामला नहीं, बल्कि विभागीय निगरानी और जवाबदेही की भी गंभीर परीक्षा होगी।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि शराब की दुलाई नियमित रूप से हो रही है, तो संबंधित अधिकारियों और प्रवर्तन दलों की नजर इस गतिविधि पर क्यों नहीं पड़ रही है? क्या परिवहन के लिए आवश्यक दस्तावेजों, आपूर्ति के स्रोत, बिक्री के रिकॉर्ड और निर्धारित नियमों का विधिवत सत्यापन किया

जा रहा है? ग्रामीण क्षेत्रों में शराब की उपलब्धता बढ़ने से सामाजिक समस्याओं, पारिवारिक विवादों और युवाओं में नशे की प्रवृत्ति को लेकर भी चिंता स्वाभाविक है।

आबकारी विभाग के अपने दायित्व, फिर निगरानी में चूक क्यों?

ओडिशा सरकार के आबकारी विभाग के अधिकारिक विवरण में शराब के निर्यात करना तथा अवैध आसवन और बिना निर्धारित शुल्क के शराब के कारोबार को रोकना प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है। ऐसे में सुंदरगढ़ जिले में सामने आए आरोपों की निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

गौरतलब है कि सितंबर 2026 के अंत में सुंदरगढ़ जिले के धरुआडीही क्षेत्र में अवैध महुआ शराब निर्माण के विरुद्ध कार्रवाई के दौरान आबकारी एवं पुलिस दल पर हमले की खबर भी सामने आई थी। रिपोर्ट के अनुसार, कार्रवाई के दौरान लगभग 1,200 किलोग्राम कनिष्ठ महुआ सामग्री और 400 लीटर देसी शराब नष्ट की

गई थी। यह घटनाक्रम जिले में अवैध शराब के कारोबार पर प्रभावी नियंत्रण की चुनौती को रेखांकित करता है। हालांकि, वर्तमान मामले में किसी अधिकारी की मिलीभगत या अपराध की पुष्टि उपलब्ध तथ्यों से नहीं होती। इसलिए प्रशासन को आरोपों की जांच कर वास्तविक स्थिति सार्वजनिक करनी चाहिए।

जांच और जवाबदेही जरूरी

जिला प्रशासन एवं आबकारी विभाग को संबंधित शराब दुकानों के स्टॉक रजिस्टर, बिक्री विवरण, परिवहन अभिलेख और ग्रामीण क्षेत्रों में आपूर्ति के स्रोतों की जांच करनी चाहिए। अनियमितता प्रमाणित होने पर संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए।

अब सवाल केवल शराब की दुलाई का नहीं, बल्कि सरकारी निगरानी व्यवस्था की विफलता का है। प्रशासन को स्पष्ट करना होगा कि नियमों का पालन सुनिश्चित किया जा रहा है या नहीं। जनता को आश्वासन नहीं, पारदर्शी जांच और ठोस कार्रवाई चाहिए।

आरजीटीए ने नए उपजिलाधिकारी का किया स्वागत, चंद्रकांत मलिक को दी विदाई की शुभकामनाएं

रिपोर्ट ड राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र

पानपोष सबडिवीजन में प्रशासनिक बदलाव पर परिवहन व्यवसायियों ने जताई सकारात्मक उम्मीद, क्षेत्र के विकास और बेहतर समन्वय की कामना

राउरकेला। राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन (RGTA) के सदस्यों ने पानपोष सबडिवीजन के नए उपजिलाधिकारी के कार्यालय पहुंचकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर एसोसिएशन के सदस्यों ने स्थानांतरित हो रहे पूर्व उपजिलाधिकारी चंद्रकांत मलिक के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उन्हें आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दीं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर राजेश जेथलिया, जगन्नाथ पंडा, प्रशांत

पाणी, गोविंद अग्रवाल, गौरी यादव, राजेंद्र गिरी, मनोज सिंह सहित RGTA के अन्य सदस्य उपस्थित थे। सदस्यों ने नए उपजिलाधिकारी प्रभात कुमार परिड़ा का स्वागत करते हुए प्रशासन और परिवहन व्यवसाय से जुड़े लोगों के बीच बेहतर संवाद, सहयोग और समन्वय की आवश्यकता को रेखांकित किया।

एसोसिएशन के सदस्यों ने पूर्व उपजिलाधिकारी चंद्रकांत मलिक के भावी दायित्वों के लिए शुभकामनाएं देते हुए उनके आगामी कार्यक्षेत्र में सफलता की कामना की।

वहीं, नए उपजिलाधिकारी का स्वागत करते हुए RGTA के सदस्यों ने उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में पानपोष सबडिवीजन विकास की नई दिशा में आगे बढ़ेगा। सदस्यों का विश्वास है कि प्रशासनिक सक्रियता, जनहित के प्रति संवेदनशीलता और विभिन्न



व्यावसायिक संगठनों के साथ सकारात्मक संवाद से क्षेत्र की विकास प्रक्रिया को गति मिल सकती है।

परिवहन क्षेत्र स्थानीय अर्थव्यवस्था, औद्योगिक गतिविधियों और व्यापारिक आपूर्ति व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे में प्रशासन और परिवहन व्यवसायियों के बीच बेहतर

तालमेल सड़क परिवहन, व्यावसायिक गतिविधियों तथा क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान में उपयोगी भूमिका निभा सकता है।

RGTA के सदस्यों ने आशा व्यक्त की कि नए उपजिलाधिकारी के कार्यकाल में पानपोष क्षेत्र विकास, प्रशासनिक दक्षता और जनसुविधाओं के मामले में नई उपलब्धियां हासिल करेगा। साथ

ही, क्षेत्र की संभावनाओं को आगे बढ़ाने और ओडिशा में अपनी विशिष्ट पहचान मजबूत करने की दिशा में सार्थक पहल होगी।

इस अवसर पर व्यक्त शुभकामनाओं ने प्रशासन और परिवहन व्यवसाय से जुड़े पक्षों के बीच सहयोगपूर्ण संबंधों को आगे बढ़ाने की अपेक्षा को भी सामने रखा।

परिवहन विशेष समाचार रिपोर्ट - क्षमता निर्माण प्रशिक्षण विशेष: भूकंप से निपटने के लिए आपदा मित्र तैयार

DDMA, पश्चिमी जिला प्रशासन और NDRF का संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

रिपोर्ट नवदीप सिंह परिवहन विशेष समाचार पत्र

स्थान: जिला मजिस्ट्रेट (DM) कार्यालय, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

दिनांक: 9 अक्टूबर, 2026

आयोजक: दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA), पश्चिमी जिला प्रशासन और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF)

प्रतिभागी: आपदा मित्र, सिविल डिफेंस वार्डन, वालंटियर्स और जिला प्रशासन के अधिकारी

परिचय: भूकंप आपदा प्रबंधन और राहत कार्यों से संबंधित क्षमता निर्माण (Capacity Building) प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत आज एक विशेष प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य आपदा (विशेषकर भूकंप) की स्थिति से निपटने के लिए स्वयंसेवकों को तकनीकी और व्यावहारिक रूप से दक्ष बनाना था।

1. प्रशिक्षण के मुख्य बिंदु

- भूकंप के दौरान भूमिका एवं जन-सहायता: भूकंप जैसी अचानक आने वाली प्राकृतिक आपदा के समय जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने, घबराहट को नियंत्रित करने और सुरक्षित स्थानों पर लोगों को पहुंचाने के तौर-तरीकों पर चर्चा की गई।
- रेस्क्यू और इमरजेंसी मैटर्स: मलबे में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने, आपदा स्थल पर आपातकालीन प्रबंधन (Emergency Management) लागू करने और त्वरित प्रतिक्रिया (Rapid Response) की तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।
- फर्स्ट एड और CPR: गंभीर रूप से घायलों को तुरंत प्राथमिक सहायता देने के तरीके सिखाए गए। साथ ही, कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (CPR) का लाइव डेमो दिया गया, ताकि हृदय गति रुकने

या सांस थमने जैसी आपात स्थिति में जान बचाई जा सके।

- कम्युनिकेशन (संचार व्यवस्था): आपदा के दौरान जब सामान्य संचार साधन (जैसे मोबाइल नेटवर्क) फेल हो जाते हैं, तब आपसी समन्वय और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए वैकल्पिक संचार माध्यमों के उपयोग के बारे में बताया गया।
- 2. विभिन्न एजेंसियों की भूमिकाओं का निर्धारण**
 - आपदा मित्र एवं सिविल डिफेंस वालंटियर्स: इनकी भूमिका 'फर्स्ट रिसॉन्डर' (प्रथम उत्तरदाता) के रूप में तय की गई। जमीनी स्तर पर राहत शिविरों का प्रबंधन, घायलों को शुरुआती मदद देना और नागरिकों का मार्गदर्शन करना इनकी मुख्य जिम्मेदारी होगी।
 - NDRF (राष्ट्रीय आपदा मोचन बल): तकनीकी रूप से जटिल और बड़े पैमाने पर चलाए जाने वाले बचाव कार्यों (Technical Rescue Operations), आधुनिक उपकरणों के संचालन और आपदा प्रबंधन के उच्च स्तरीय दिशानिर्देशों की जानकारी दी गई।
 - DDMA और पश्चिमी जिला प्रशासन: समस्त राहत एवं बचाव कार्यों का समन्वय करना, संसाधनों का उचित वितरण और विभिन्न विभागों के बीच तालमेल बिठाना जिला प्रशासन की मुख्य जिम्मेदारी के रूप में रेखांकित किया गया।
 - 3. निष्कर्ष यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पश्चिमी जिले में आपदा से निपटने की तैयारियों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। इस सत्र से 'आपदा मित्र' और 'सिविल डिफेंस वालंटियर्स' की क्षमता में वृद्धि हुई है, जिससे वे भविष्य में किसी भी संभावित आपात स्थिति या भूकंप का डटकर मुकाबला करने और आम जनता की जान-माल की रक्षा करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।
- > सुरक्षित भारत। आपदा जोखिम न्यूनीकरण। NDRF | DDMA पश्चिमी जिला

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh

• अक्टूबर 2026 • विशेष अंक

भूकंप से निपटने के लिए आपदा मित्र तैयार

DDMA, पश्चिमी जिला प्रशासन और NDRF का संयुक्त प्रशिक्षण, DM कार्यालय राजौरी गार्डन, 9 अक्टूबर 2026

● फर्स्ट एड और CPR का लाइव डेमो

● मलबे में रेस्क्यू और रैपिड रेस्पॉन्स

● वैकल्पिक संचार व्यवस्था

क्षमता निर्माण प्रशिक्षण

50+ प्रतिभागियों ने लिया प्रशिक्षण | NDRF द्वारा संचालित

प्रशिक्षण के दौरान - NDRF द्वारा भूकंप आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण

प्रशिक्षण समापन पर समूह फोटो - आपदा मित्र एवं अधिकारीगण

रिपोर्ट: परिवहन विशेष डेस्क | दिनांक: 9 अक्टूबर 2026

सुरक्षित भारत | आपदा जोखिम न्यूनीकरण | NDRF | DDMA पश्चिमी जिला

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला

सह संपादक: पिकी कुड्डू

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

नकारात्मकता के अंत का उत्सव : नवरात्र में जागृत होती अंतर्मन की शक्ति और सामाजिक एकात्मता

सुबोध चंद्र प्रांत संगठन मंत्री विश्व हिंदू परिषद, इंद्रप्रस्थ प्रांत (दिल्ली)

जब समाज में निराशा का अंधकार गहराने लगे, जीवन में नकारात्मकता बढ़ने लगे और मनुष्य अपनी अंतर्निहित शक्ति को भूलने लगे, तब मां दुर्गा की आराधना हमें स्मरण कराती है कि अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, चेतना का एक दीप उसे मिटाने की क्षमता रखता है। नवरात्र इसी शक्ति, इसी विश्वास और इसी जागरण का महापर्व है।

नौ दिनों तक चलने वाला नवरात्र केवल देवी के नौ स्वरूपों की उपासना का पर्व नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर छिपी शक्ति को पहचानने, दुर्गुणों पर विजय प्राप्त करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का अवसर है। मां दुर्गा के हाथों असुरों का वध इस शाश्वत सत्य का उद्घोष है कि जब विवेक, साहस, करुणा और संकल्प जागृत होते हैं, तब नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करना संभव होता है। भारतीय संस्कृति में शक्ति का आराधना का अर्थ केवल व्यक्तिगत कल्याण नहीं, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र के उत्थान का संकल्प भी है। मां दुर्गा की उपासना हमें नारी सम्मान, सामाजिक समरसता, सेवा, संस्कार और सांस्कृतिक एकात्मता की प्रेरणा देती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग परंपराओं से मनाया जाने वाला यह पर्व हमारी साझा सांस्कृतिक चेतना को एक सूत्र में पिरोता है।

देवी की कथाओं में छिपा जीवन-दर्शन

देवी और असुरों के संघर्ष की कथाएं हमारे भीतर चलने वाले सद्गुणों और दुर्गुणों के संघर्ष का प्रतीक भी हैं। रक्तबीज बार-बार जन्म लेने वाली नकारात्मकता, महिषासुर आलस्य और जड़ता तथा धूम्रलोचन भ्रम और अस्पष्ट दृष्टि का प्रतीक माना जा सकता है। चंड-मुंड की कथा भी उभता और नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय का संदेश देती है। रक्तबीज की

कथा हमें सिखाती है कि किसी बुराई को केवल ऊपर से समाप्त करना पर्याप्त नहीं है; उसके मूल कारणों को पहचानना भी आवश्यक है। महिषासुर का वध हमें आलस्य और जड़ता छोड़कर कर्मशील बनने की प्रेरणा देता है। धूम्रलोचन का प्रसंग स्पष्ट दृष्टि, विवेक और आत्मचिंतन का महत्व समझाता है। मां दुर्गा के हाथों में स्थित त्रिशूल को ज्ञान, प्रेम और कर्म के संतुलन का प्रतीक मानकर भी समझा जा सकता है। ज्ञान सही दिशा देता है, प्रेम संवेदनशीलता जगाता है और कर्म विचारों को व्यवहार में परिणत करता है। इन गुणों का समन्वय ही मनुष्य को अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देता है। नवरात्र में मां शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है। ये स्वरूप संकल्प, तप, अनुशासन, सृजन, मातृत्व, साहस, निर्भयता, पवित्रता और साधना की पूर्णता का संदेश देते हैं। इस प्रकार नवरात्र आत्मशुद्धि, चरित्र निर्माण और जीवन को श्रेष्ठ बनाने का अवसर है।

नवरात्र की सामाजिक भूमिका

नवरात्र का महत्व व्यक्तिगत साधना से आगे बढ़कर सामाजिक जीवन तक विस्तृत है। जब समाज के लोग एक साथ पूजा-अर्चना करते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और सेवा कार्यों से जुड़ते हैं, तब आपसी सहयोग, विश्वास और सामूहिकता की भावना मजबूत होती है। दुर्गा पूजा के पंडाल, गरबा, भजन और सामूहिक अनुष्ठान विभिन्न वर्गों के लोगों को एक मंच पर लाते हैं। इससे सामाजिक संवाद बढ़ता है और साझा सांस्कृतिक विरासत के प्रति अपनत्व विकसित होता है। भारतीय समाज में पर्वों की भूमिका केवल परंपराओं को जीवित रखने तक सीमित नहीं है। वे परिवारों को जोड़ते हैं, पीढ़ियों के बीच संवाद बढ़ाते हैं और सामूहिक जीवन में सहयोग की भावना विकसित करते हैं। नवरात्र की अवसर पर आयोजित धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों और युवाओं को अपनी परंपराओं से परिचित कराने का माध्यम

बनते हैं।

इस पर्व को सामाजिक सेवा से जोड़कर इसकी सार्थकता और बढ़ाई जा सकती है। जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराना, गरीब बच्चों की शिक्षा में सहयोग देना, स्वच्छता अभियान चलाना, रक्तदान करना और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयास करना नवरात्र की सकारात्मक भावना को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचा सकता है।

नारी सम्मान और शक्ति का वास्तविक अर्थ

मां दुर्गा को शक्ति, साहस और सृजन की अधिष्ठात्री माना गया है। उनकी आराधना तभी सार्थक होगी, जब समाज महिलाओं की गरिमा, सुरक्षा, शिक्षा, स्वावलंबन और सम्मान के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाए। कन्या पूजन हमारी श्रद्धा का महत्वपूर्ण प्रतीक है, लेकिन बालिकाओं की शिक्षा, पोषण, सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। महिलाओं को निर्णय लेने के अवसर देना, उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और उनके प्रति भेदभाव समाप्त करना देवी उपासना की भावना को व्यवहार में उतारना है। नवरात्र हमें यह आत्ममंथन करने का अवसर देता है कि क्या हम अपने दैनिक व्यवहार में भी नारी शक्ति का सम्मान करते हैं? देवी की प्रतिमा के सामने श्रद्धा से सिर झुकाने के साथ प्रत्येक महिला के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करना ही हमारी उपासना को वास्तविक अर्थ प्रदान करता है।

परिवार के संस्कार और युवा पीढ़ी का दायित्व

परिवार समाज की प्रथम पाठशाला है। जब बच्चे अपने माता-पिता के साथ पूजा-अर्चना करते हैं, देवी की कथाएं सुनते हैं और भारतीय परंपराओं को समझते हैं, तब उनके भीतर नैतिक मूल्यों



और सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है। परिवार ही वह स्थान है, जहां सेवा, अनुशासन, करुणा, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यबोध के संस्कार विकसित होते हैं। युवा पीढ़ी के लिए नवरात्र का संदेश विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शक्ति का अर्थ केवल शारीरिक सामर्थ्य नहीं, बल्कि चरित्र की दृढ़ता, विचारों की स्पष्टता और समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी है। युवाओं को अपनी ऊर्जा का उपयोग नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जागरण और जरूरतमंदों की सहायता जैसे रचनात्मक कार्यों में करना चाहिए। जब युवा अपने व्यक्तित्व का विकास के साथ समाज की उन्नति का संकल्प लेते हैं, तब वे राष्ट्र निर्माण के सशक्त सहभागी बनते हैं।

सामाजिक समरसता और सेवा का संकल्प

नवरात्र हमें सिखाता है कि समाज की वास्तविक शक्ति आपसी एकता में निहित है। जाति, भाषा, क्षेत्र और आर्थिक स्थिति

के आधार पर भेदभाव से ऊपर उठकर प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान का भाव रखना आवश्यक है। जब हम एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनते हैं और समाज के अंतिम व्यक्ति तक सेवा पहुंचाने का प्रयास करते हैं, तभी सामाजिक समरसता साकार होती है। अन्नदान, स्वच्छता अभियान, रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण तथा वंचित बच्चों की शिक्षा जैसे कार्य इस पर्व को जनकल्याण से जोड़ सकते हैं। धार्मिक आस्था जब सेवा और संवेदनशीलता के साथ जुड़ती है, तब उसका प्रभाव व्यक्ति से आगे बढ़कर पूरे समाज तक पहुंचता है। सभी शक्ति दूसरों को कमजोर करने में नहीं, बल्कि कमजोर और जरूरतमंद लोगों को सामर्थ्यवान बनाने में है। नवरात्र हमें इसी संवेदनशील और उत्तरदायी समाज के निर्माण की प्रेरणा देता है।

शक्तिपीठ: भारत की सांस्कृतिक एकात्मता के केंद्र

नवरात्र की महिमा शक्तिपीठों की

परंपरा से और व्यापक हो जाती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, दक्ष यज्ञ की घटना के बाद माता सती के शरीर के अंग अथवा आभूषण जहां-जहां गिरे, वे स्थान शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों और परंपराओं में शक्तिपीठों की संख्या अलग-अलग वर्णित है। भारत और उसके बाहर स्थित इन पवित्र स्थलों की परंपरा भारतीय सभ्यता के व्यापक सांस्कृतिक विस्तार का परिचय देती है। पाकिस्तान में हिंगलाज सहित बांग्लादेश, नेपाल और अन्य क्षेत्रों से जुड़ी देवी उपासना की परंपराएं हमारी प्राचीन सांस्कृतिक स्मृतियों की व्यापकता को दर्शाती हैं।

शक्तिपीठ केवल आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक भी हैं। इन तीर्थों की परंपरा हमें स्मरण कराती है कि भारतीय सभ्यता का सांस्कृतिक विस्तार वर्तमान राजनीतिक सीमाओं से कहीं अधिक व्यापक रहा है। शक्तिपीठों की परंपरा में देवी के साथ भैरव की उपस्थिति भी महत्वपूर्ण है। अनेक शक्तिपीठों में भैरव को क्षेत्र का रक्षक माना जाता है। यह शिव और शक्ति के अभिन्न संबंध को प्रकट करता है। भारतीय दर्शन में शिव चेतना हैं और शक्ति उस चेतना की सक्रिय अभिव्यक्ति। दोनों का संबंध सृष्टि की पूर्णता का प्रतीक है।

विविधता में एकता का उत्सव

बंगाल की दुर्गा पूजा, गुजरात का गरबा, उत्तर भारत का कन्या पूजन और दक्षिण भारत की देवी आराधना भारतीय संस्कृति की विविधता को प्रकट करते हैं। पूजा-पद्धतियां, भाषाएं और क्षेत्रीय परंपराएं अलग-अलग हैं, लेकिन श्रद्धा का मूल भाव एक है। यही भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना की विशेषता

है। यहां विविधता को विभाजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि के रूप में देखा गया है। नवरात्र का पर्व विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और पीढ़ियों को साझा सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। शक्तिपीठों से लेकर घर-घर में होने वाली देवी आराधना तक, यह परंपरा हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने और दूसरों की आस्थाओं के प्रति सम्मान रखने की प्रेरणा देती है।

नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर

आज समाज तनाव, कटुता, स्वार्थ, असहिष्णुता और निराशा जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में नवरात्र का संदेश और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। हमें अपने भीतर के क्रोध, अहंकार, आलस्य और निराशा को पहचानकर उन्हें दूर करने का संकल्प लेना चाहिए। व्यक्ति का चरित्र परिवार को प्रभावित करता है, परिवार समाज का निर्माण करता है और समाज की एकता एवं संस्कार राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं। इसलिए नवरात्र केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि से लेकर राष्ट्र निर्माण तक की प्रेरणा देने वाला अवसर है। इस नवरात्र हम अपने भीतर की किसी एक कमजोरी को दूर करने, किसी जरूरतमंद की सहायता करने, नारी सम्मान को व्यवहार में उतारने और समाज में सद्भाव बढ़ाने का संकल्प लें।

आइए, इस नवरात्र केवल मंदिरों में प्रकट करता है। भारतीय दर्शन में शिव चेतना हैं और शक्ति उस चेतना की सक्रिय अभिव्यक्ति। दोनों का संबंध सृष्टि की पूर्णता का प्रतीक है।

विविधता में एकता का उत्सव बंगाल की दुर्गा पूजा, गुजरात का गरबा, उत्तर भारत का कन्या पूजन और दक्षिण भारत की देवी आराधना भारतीय संस्कृति की विविधता को प्रकट करते हैं। पूजा-पद्धतियां, भाषाएं और क्षेत्रीय परंपराएं अलग-अलग हैं, लेकिन श्रद्धा का मूल भाव एक है। यही भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना की विशेषता

स्वस्थ भारत की और बढ़ते कदम: स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद: रविवार शाम

हैदराबाद शहर के अतापुर में स्वस्थ भारतमिशन के तहत, स्वास्थ्य से जुड़े एक सामाजिक संगठन ' *हम फिट तो हैंडियाफिट * ' के द्वारा होटल किनारा ग्रांड में एक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसकी मुख्य थीम पीने वाले पानी के बारे में जागरूकता लाना था। संगठन की स्थानीय वरिष्ठ महिला हेल्थएक्सपर्टसोन् सीरवीनेअपनेउद्बोधनकेमाध्यम सेलोगोंकोअपनशरीरकोस्वस्थ रखनेकेलिएअपनेखानपानको सल्विक बनानेऔरपीनेवालेपानी कीमहत्तापरजोरदिया। उन्होंने बतायाकिईसानकेशरीरमेंऔसतन 70से72 प्रतिशतपानीहोताहैऔर शरीरकी80 प्रतिशतसेअधिक बीमारियोंकाकारणऔरसमाधान पानीहीहोताहै।लाइव डेमोंस्ट्रेशनके माध्यमसे डेडवाटरऔरलाइव वाटरकेबीचतुलनाकरतेहुए उन्होंने बतायाकिजापाननिर्मितभिंडकल डिवाइससेनिकलनेवालाकैनेन वाटरहाइड्रोजनरिच, माइक्रो कलस्टर, एंटीऑक्सीडेंटऔर एकनार्इजहोताहै, जोकिबेहतर हाइड्रेशनऔरडिटॉक्सिफिकेशनके कारणशरीरमेंबलडस्कुलेशनऔर डाइनेशनलेवलकोबढ़ाताऔर शरीरकेपीएचलेवलकोमैटेनरखता हैऔरबीमारियोंकोशरीरमेंपनपने सेबाधता।11.5 पीएचकेस्ट्रॉंग एकनार्इजवाटरफलोंऔरसब्जियों परलगेपेस्टीसाइड्स- केमिकलको



हटाताहै।हैदराबादकेक्षेत्रीय डिस्ट्रीब्यूटर्सोन्रावोड, सुमन सीरवी, औरमोहिनीसीरवीनेबताया किहैदराबादऔरआसपासकेक्षेत्रमें 100सेअधिकपरिवारकैनेनवाटर काइस्तेमालकररहेहैंजिससेउनको इसचमत्कारिकपानीकेइस्तेमालसे एंप्सिडिटी, बीपी, शुगर,गैस्ट्रिक, कब्ज, माइग्रेन, कैन्सरऔरऔर ज्वाइंटपेनजैसीबीमारियोंमें चमत्कारिकसकारात्मकपरिमाण मिलेहैं।अहमदाबादसेपधारेसंगठन केवरिष्ठपरिचालकीअर्निनल चावड़ा,गीताबन, रेखासीरवीऔर जगदीशबर्पानेअपनेउद्बोधनके माध्यमलोगोंस्वस्थजलका इस्तेमाल, सल्विकजीवनशैलीऔर प्रकृतिसेजुड़े रहनेपरजोरदिया। कार्यक्रममेंक्षेत्रीयडिस्ट्रीब्यूटरप्रियंका

सीरवीनेबतायाकि महिलाओंके स्वास्थ्यमेंमिलेचमत्कारिक सकारात्मकपरिणामकेकारण, यह प्रोजेक्ट, महिलास्वास्थ्य, स्वावलंबन औरसशक्तिकरणकीदिशामेंमील कापथरसाबितहो रहाहै।जिसकी वजहसेहैदराबादमें35सेअधिक महिलाएंसक्रियरूपसेइस चमत्कारिकजलकोलोगोंतकपहुंचा करलोगोंकीजिंदगीबदल रहीहै।इस कार्यक्रममेंअर्जुनसिंहसीरवी, प्रेमकिशोरसीरवी, हरिसिंह राजपूत, माधुराम, दयाकर शमशाबाद, किशनारामसीरवीपॉटमार्केट, रमेश सीरवीअतापुर, केनारामसीरवी अतापुरसहितशिक्षा, स्वास्थ्य, खेल एवंसामाजिकगर्गविभिंधिसेजुड़े100 सेअधिकगणमान्यलोगोंनेभाग लिया।

कानपुर में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच बिठूर नगर पंचायत अध्यक्ष पद का चुनाव आज, दिए निर्देश

सुनील बागपेई, कानपुर। मंगलवार को यहां बैरद कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच बिठूर नगर पंचायत अध्यक्ष पद के उपबुनाव को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और सफुलत संपन्न कराने की तैयारी को अंतिम रूप दिया जा चुका है। इस दौरान पुलिस अधिकारियों की और सेआक्रयक आदेश निर्देश भी दिए गए हैं। आज मंगलवार को होने वाले मतदान के दौरान सभी मतदान केंद्रों और मतदेय स्थलों पर पुलिस की कड़ी निगरानी रहेगी। साथ ही संवेदनशील और अतिसंवेदनशील केंद्रों पर विशेष सतर्कता बरतने के साथ सै संवेध्य व्यक्तियों और वाजनों की गतिविधियों पर भी नजर रखी जाएगी। पुलिस इस बात की भी कोशिश कर रही है कि कोई भी व्यक्ति मतदाताओं को उसने- धमकाने या उन पर किसी तरह का दबाव बनाने की कोशिश न कर सके और सभी मतदाता निर्भीक होकर अपने नागरिकार का प्रयोग कर सकें। इस बारे में आज रातगवार को पुलिस उपबुनात प्रियम एलएन कारिम आबिदी ने उपबुनाव को सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की ब्रीफिंग की। उन्होंने निर्वाचन इ्यूटी में तैनात पुलिसकर्मियों को उनकी जिम्मेदारियों के बारे में विस्तार से बताते हुए कमय से निर्णीत इ्यूटी स्थल पर पहुंचने पर पहुंचने को कहा गया है। किसी भी संवेध्य गतिविधि, विवाद या तनाव की स्थिति सामने आने पर तत्काल मौके पर पहुंचकर प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। पिछलत पुलिसइस चुनाव को निष्पक्षऔर शांति तरीके से संपन्न करने के लिएएर संभव कोटिबद्ध नजर आ रही है।

झारखंड नियुक्ति परीक्षाओं में विज्ञापन रद्द करने के फैसले को हाईकोर्ट ने सुरक्षित रखा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड लोक सेवा आयोग की संयुक्त सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी नियुक्ति परीक्षा और फूड सेफ्टी ऑफिसर प्रतियोगिता परीक्षा के विज्ञापन रद्द करने के फैसले को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओं पर सोमवार, 12 अक्टूबर को झारखंड हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने अदालत में सीलबंद लिफाफे में स्टेटस रिपोर्ट सौंपी. दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत ने फैसला सुरक्षित रख लिया. साथ ही प्रार्थियों और राज्य सरकार को बहस की शॉर्ट रिटरेन नोट दाखिल करने में अनुमति दी.

न्यायमूर्ति दीपक रोशन की अदालत में मामले की सुनवाई दोपहर 2:15 बजे शुरू हुई और 3 बजे समाप्त हो गई. राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता मीनाक्षी अरोड़ा और महाधिवक्ता रोहित राय ने पक्ष रखा. वहीं, प्रार्थियों की ओर से अधिवक्ता अमृतांशु वत्स ने पैरवी की. सुनवाई के दौरान हस्तक्षेपकर्ताओं की ओर से भी दलीलें पेश की गईं. राज्य सरकार ने अपनी बहस पूरी की. इसके बाद अदालत ने सभी पक्षों को सुनने के बाद अपना

फैसला सुरक्षित रख लिया.

इन याचिकाओं में राज्य सरकार की ओर से विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के विज्ञापन रद्द करने संबंधी अधिसूचनाओं को चुनौती दी गई है. प्रार्थियों ने सरकार के फैसले पर सवाल उठाते हुए अदालत से राहत देने का आग्रह किया है. मामला जेपीएससी की संयुक्त सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा, सीडीपीओ नियुक्ति परीक्षा और फूड सेफ्टी ऑफिसर प्रतियोगिता परीक्षा से जुड़ा है. इन परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए हाईकोर्ट का फैसला महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इससे संबंधित नियुक्ति प्रक्रिया को लेकर आगे की स्थिति स्पष्ट हो सकती है.

प्रार्थी सुभाष मुर्मू और अन्य की ओर से याचिका दायर कर सीडीपीओ नियुक्ति परीक्षा रद्द करने के राज्य सरकार के फैसले को चुनौती दी गई है. याचिका में सरकार की ओर से जारी अधिसूचना पर सवाल उठाये गए हैं. प्रार्थियों ने इस मामले में न्यायिक हस्तक्षेप की मांग की है. अदालत में हुई सुनवाई के बाद अब इस याचिका पर फैसले का इंतजार है

प्रार्थी दीपामाला, आशीष अक्षत, आकांक्षा मिंज और अन्य की ओर से जेपीएससी की 11वीं से 13वीं संयुक्त सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा का

विज्ञापन रद्द करने संबंधी अधिसूचना को चुनौती दी गई है. यह मामला भी सोमवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध था. प्रार्थियों की ओर से सरकार के फैसले के खिलाफ अपना पक्ष रखा गया. अब अदालत के फैसले से इस मामले में आगे की कानूनी स्थिति स्पष्ट होगी.

प्रार्थी सौरभ सिंह और अन्य ने फूड सेफ्टी ऑफिसर प्रतियोगिता परीक्षा रद्द करने के फैसले को चुनौती देते हुए याचिका दायर की है. इस मामले को भी अन्य संबंधित याचिकाओं के साथ सुनवाई के दौरान रखा गया. राज्य सरकार की स्टेटस रिपोर्ट और सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत ने इन मामलों में फैसला सुरक्षित रख लिया

उधर, इन रिट याचिकाओं को संबंधित अपील याचिकाओं के साथ टैग करने की मांग को लेकर दायर विशेष मेशन को चीफ जस्टिस एमएस सोनक की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने खारिज कर दिया. इस प्रकार, परीक्षाओं को रद्द करने के फैसले के खिलाफ दायर याचिकाओं पर अब हाईकोर्ट के अंतिम आदेश का इंतजार है. अदालत ने शॉर्ट रिटेन नोट दाखिल करने की छूट दी है, लेकिन फैसले की तारीख घोषित होने की जानकारी उपलब्ध नहीं है.

अधिवक्ता तथा आरोपीएफ सब-इंस्पेक्टर के बीच कोर्ट परिसर में मारपीट

बार एसोसिएशन ने संबोधित पुलिस कर्मों पर एवसन की मांग की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, धनबाद में उस समय रणक्षेत्र में तब्दील हो गया, जब एक आरोपी को हिरासत में लेने को लेकर अधिवक्ता और रेलवे सुरक्षा बल के सब-इंस्पेक्टर के बीच विवाद हो गया. देखते ही देखते विवाद ने मारपीट का रूप ले लिया और कोर्ट परिसर में हंगामा शुरू हो गया. घटना के बाद मौके पर पहुंची कई थानों की पुलिस ने स्थिति को

संभाला.

बार एसोसिएशन ने घटना पर नाराजगी जताते हुए संबंधित पुलिसकर्मों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है. मामला धनबाद कोर्ट परिसर का है, जहां एक आरोपी को सरेंडर कराने के लिए ले जाने के दौरान विवाद हुआ. अधिवक्ता संतोष सिंह के मुताबिक, वह आरोपी को सरेंडर कराने के लिए कोर्ट लेकर जा रहे थे. इसी दौरान खुद को आरोपीएफ का जवान बताने वाले व्यक्ति ने आरोपी को हिरासत में लेने पर जोर दिया. इसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच कहासुनी शुरू हुई, जो देखते ही देखते



मारपीट तक पहुंच गई.

एसोसिएशन ने संबोधित पुलिसकर्मों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है. वहीं, पुलिस का कहना

है कि लिखित शिकायत मिलने के बाद मामले में आगे की कार्रवाई की जाएगी. फिलहाल इस मामले में लिखित शिकायत और पुलिस की

आगे की कार्रवाई का इंतजार है. अब देखना होगा कि कोर्ट परिसर में हुए इस विवाद पर पुलिस क्या कदम उठाती है।